DR. SUMAN LAL RAY
Assistant Professor
(Guest faculty)
Deptt. of Sanskrit
SRAP College, Basa
Chakia, BRABU-
Muz. Ar.

B.A. (Hons.) Part – II
Subject – Sanskrit
Paper — IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्कः)

श्लोकों का अन्वय सहित हिन्दी अनुवाद

18

श्लोक:

इदं किलाव्याजमनोहरं वपुस्तपः क्षमं साधयितुं य इच्छति।
ध्रुवं स नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुमृषिर्व्यवस्यति॥

(अभिज्ञान० 1/18)

अन्वय:

यः अव्याजमनोहरं इदं वपुः तपः क्षमं साधयितुम् इच्छति
सः ऋषिः ध्रुवं नीलोत्पलपत्रधारया शमीलतां छेत्तुं व्यवस्यति किल।

अनुवाद

स्वभाव से ही सुन्दर मनोहर शरीरवाली इस बाला को ये ऋषि तपस्या के योग्य बनाना चाहते हैं; वे तो मानो नीलकमल के कोमल पत्तों की धार से कठिन और कण्टकित शमी वृक्ष की शाखा को काटना चाहते हैं।

———— ० ————